P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिला शोषण व मादक द्रव्य व्यसनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

मैनपाल
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
डा.भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश

हमारा समाज सदियों से पुरूष प्रधान समाज रहा है। पितृसत्ता असमानता पर आधारित व्यवस्था है जिसमें महिला के जीवन के प्रत्येक पक्ष का निर्धारण पुरुषों द्वारा किया जाता है।। ऐसे में महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है। समाज में किसी प्रकार की विसंगति या समस्या आने पर सर्वप्रथम व सर्वाधिक प्रभावित महिलायें ही होती है। मादक द्रव्य व्यसन की समस्या भी इसी प्रकार की सामाजिक समस्या है। मादक द्रव्य व्यसन चाहे महिलाओं द्वारा किया जाये या पुरुषों द्वारा, इसके दुष्परिणाम का शिकार महिलाएँ होती है। अधिकांशतः मादक द्रव्यों का सेवन पुरुषों द्वारा ही किया जाता है लेकिन इससे उत्पन्न समस्याएँ समाज के सभी वर्गो विशेषकर महिलाओं को ही भुगतनी पड़ती हैं। मादक द्रव्य व्यसन के कारण महिलाओं को शारीरिक रूप से हिंसा, मानसिक रूप से उत्पीड़न, परिवार संचालन में परेशानी, सामाजिक रूप से निम्न स्थिति, आर्थिक रूप से तंगहाली का सामना करना पड़ता है। ये समस्त प्रकार के शोषण परस्पर संबंधित हैं जो एक प्रकार के दुष्चक्र का निर्माण करते हैं। इस दुष्चक्र से निकले बिना समाज की आधी आबादी को बराबरी पर नहीं ला सकते, ना ही एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं। इस शोषण से जिनती जल्दी निजात मिल सके, उतना ही समाज के लिये स्वास्थ्यकर होगा।

मुख्य शब्द : सामाजिक समस्या, महिला शोषण, सामाजिक विषमता, मादक द्रव्य, द्रव्य व्यसन, अपराध, मद्यनिषेध आदि।

प्रस्तावना

मानव जीवन में महिलाओं की भूमिका बहुत अहम है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती । जीवन व सृष्टि की निरंतरता के लिये महिलाएँ बराबर की भागीदार हैं। महिलाएँ बच्चों को जन्म देकर परिवार बनाती है, परिवार के सदस्यों से घर बनता है, घर से समाज बनता है और समाज से देश व दुनिया का अस्तित्व है। महिला और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं जिनका अस्तित्व एक–दूसरे पर आश्रित है। वैसे तो पौराणिक समाज में महिलाओं को देवी लक्ष्मी का अवतार माना गया है। कहा जाता है कि यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते है। लेकिन व्यवहार में महिलाओं की स्थिति आज भी पुरुषों के समकक्ष नहीं है। महिलाओं के खिलाफ उत्पीड़न के मामलों में निरन्तर वृद्धि हो रही हैं।[1] वैश्वीकरण के इस दौर में भी महिलाएँ अनेक प्रकार से शोषण की शिकार हैं। कभी बाल–विवाह के कारण विधवा का जीवन गुजारना पड़ता है, तो कभी पति की मृत्यु के कारण पति के साथ आग में जलना पड़ा, तो कभी दहेज के नाम पर मौत के घाट उतार दिया गया, कभी भ्रुण हत्या के कारण माँ की कोख में ही समाप्त कर दी गई, तो कभी देवदासी के रूप में मंदिरों में छोड़ दी गई, कभी गरीबी के नाम पर बेच दी जाती है, तो कभी पुरुष साथी के बहकावे में आकर कोठे तक पहुँचा दी जाती हैं, तो कभी पशुओं की भांति व्यापार व उपभोग का साधन बन जाती है। इस प्रकार हर कालखण्ड में महिलाएँ शोषण का शिकार होती रही हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने के लिये निम्नलिखित उद्देश्य है :–

1. महिलाओं व पुरुषों में मादक द्रव्य व्यसन की स्थिति ज्ञात करना।
2. ज्ञात करना कि मादक द्रव्य व्यसन के कारण महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति कितनी प्रभावित होती है ?
3. मादक द्रव्य व्यसन के कारण महिलाओं को किस–किस प्रकार से शोषण का सामना करना पड़ता है ?

4. मादक द्रव्य से होने वाले महिला शोषण से मुक्ति के लिये क्या प्रयास किये जा सकते हैं ?

अध्ययन क्षेत्र व अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के दो गाँव ढाणी लालखां व शेरगढ़ को शामिल किया गया है। इस गाँवों में से 250 व्यक्तियों का चयन दैव निर्देशन पद्धति से किया गया है। इनमें से 167 व्यक्ति विवाहित हैं । इन विवाहित पुरुषों की पत्नियों को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है तथा तथ्य एकत्रित करने के लिये साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

अंग्रेजी शासन काल व स्वतंत्र भारत में काफी प्रयासों के बाद भी अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। इनमें से कुछ समस्याएँ प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं से संबंधित न होकर भी महिलाओं को ही अधिक मात्रा में प्रभावित करती है। इन सामाजिक समस्याओं मे एक प्रमुख समस्या मादक द्रव्यों के दुरूपयोग की है । मादक द्रव्य व्यसन की आदत न केवल व्यसनी व्यक्ति को प्रभावित करती है, बल्कि परिवार और समाज को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुँचाती है।[2] मादक द्रव्यो के सेवन की समस्या महिलाओं की तुलना में पुरुषों में कई गुणा अधिक है, लेकिन इसके दुष्प्रभाव की बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक प्रभावित होती है। मादक द्रव्यों का सेवन पुरुषों द्वारा किया जाता है परन्तु दुष्प्रभाव व शोषण महिलाओं का होता है तथा इसके विपरीत मादक द्रव्यों का सेवन महिलाओं द्वारा किया जाता है, तो भी शोषण महिलाओं का होता है। समाज में मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृत्ति निरंतर तीव्र गति से पांव पसार रही है । इससे समाज का कोई भी वर्ग चाहे वह अमीर या गरीब हो, पुरुष हो या महिला हो, ग्रामीण हो या नगरीय हो, सभी इसकी चपेट में आ चुके हैं तथा निरतंर इसमें वृद्धि हो रही है। समाज की इस गंभीर बीमारी से पुरुषों व बच्चों के साथ–साथ महिलाओ पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है तथा यह प्रभाव महिला शोषण के रूप में हमारे सामने दृष्टिगोचर हो रहा है। इस समस्या के कारण महिलाओं के जीवन में कोई एक पक्षीय प्रभाव नहीं पड़ रहा, बल्कि प्रत्येक पक्ष प्रभावित हो रहा है तथा अनेक प्रकार से शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से महिलाओं का शोषण हो रहा है।

मादक द्रव्य सेवन के परिणामस्वरूप सेवनकर्ता के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है तथा उनका व्यवहार उत्तेजक हो जाता है। ऐसी स्थिति में सबसे अधिक प्रभावित परिवार होता है । परिवार में भी महिलाएँ सर्वाधिक प्रभावित होती है। मादक द्रव्य के अधिक सेवन के कारण पत्नी से गाली–गलौच आम बात है। कभी कभार मारपीट का सामना भी करना पड़ता है। इसके चरम परिणती हत्या व बलात्कार के रूप में होती है। मादक द्रव्य सेवन के कारण बलात्कार व हत्या जैसे समाचारों से समाचार पत्र भरे पड़े हैं। अपराध ब्यूरो रिकार्ड के अनुसार बलात्कार के 87 प्रतिशत मामलों में आरोपी नशे की हालत में होते है। चाहे वो दिल्ली का निर्भया सामूहिक दुष्कर्म मामला या हाल ही में अलवर के थानागाजी का दुष्कर्म कांड हो। महिलाओं के विरूद्ध होने वाले अधिकतर अपराध प्रकाश में नहीं आते।[3] इस संबंध में जब मादक द्रव्य व्यसनी की पत्नियों से पूछा गया तो 167 में से 54 महिलाओं अर्थात 32.33 प्रतिशत महिलाएँ मानती हैं कि मादक द्रव्यों के सेवन के कारण उनके साथ गाली–गलोच की गई तथा इनमें से 26 महिलाओं 15.56 प्रतिशत ने अपने साथ मारपीट होना स्वीकार किया। इस प्रकार से मादक द्रव्यों के सेवन से महिलाओं को गाली–गलोच से लेकर बलात्कार व हत्या जैसे जघन्य अपराधों का शिकार होना पड़ता है।

शारीरिक शोषण का किसी व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है लेकिन मानसिक शोषण का प्रभाव शारीरिक शोषण से भी गहरा है। जब किसी को बार–बार परेषान किया जाता है, तो उसका प्रभाव व्यक्ति के मस्तिष्क पर पड़ता है, निरंतर जारी रहता है तथा व्यक्तित्व को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। बार–बार गाली गलौच, मारपीट या अन्य गंभीर शारीरिक उत्पीड़न की शिकार महिलाएँ अपना दर्द किसी को बता नहीं सकती। इसलिये वह जीवनभर मानसिक पीड़ा से गुजरती है।[4] अनुसंधान में शामिल 167 महिलाओं में से 97 महिलाओ अर्थात 58.05 प्रतिशत ने मादक द्रव्यों के कारण मानसिक उत्पीड़न की बात स्वीकार की। मादक द्रव्य सेवन के कारण घर नहीं पहुँचना या देरी से घर पहुँचना, सही तरीके से बात न करना, झुंझलाकर बोलना, अपमान करना, बच्चों के सामने यौन इच्छा प्रकट करना आदि सब कारणों से महिलाये मानसिक रूप से परेशान रहती हैं तथा ऐसा निरतंर होने से अनेक प्रकार की गंभीर मानसिक रोगों का शिकार बन जाती है। इस प्रकार से मादक द्रव्य सेवन करने वाले पतियों के द्वारा दो तिहाई महिलाओं का मानसिक शोषण किया जाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, लेकिन समाज का आभास उसे परिवार के माध्यम से ही होता हैं। परिवार विश्व की आधारभूत इकाई है और ग्रामीण महिलाओं के लिये परिवार का महत्व और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन घर की चहारदीवारी तक ही सीमित होता है। ऐसे में परिवार ही उसका संसार है। परिवार व नातेदारी संबंध महिलाओं के लिए महत्त्वपूर्ण हो जाते है। हमारे समाज मे परिवार वैसे भी पितृसत्तात्मक है जिस कारण महिलाओं को पहले से ही कम अधिकार प्राप्त होते है लेकिन जिन पत्नियों के पति शराबी होते है उनमें पारिवारिक स्तर पर उत्पीड़न का अनुपात अधिक है।[5] वहाँ महिलाओं का पारिवारिक जीवन नरक बन जाता है। अपने ससुराल में महिला के लिये पति ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है जिसे अपनी समस्याओं से अवगत करवा सकती है अगर पति मादक द्रव्यों का व्यसनी हो जाता है तो परिवार के अन्य सदस्य भी उसका मान सम्मान नहीं करते है, उल्टे उसका शोषण ही किया जाता है। 167 महिलाओं में से 64 (38.32 प्रतिशत) ने माना है कि पति द्वारा मादक द्रव्य सेवन के कारण परिवार के अन्य सदस्यों का व्यवहार उचित नहीं रहता तथा मादक द्रव्य सेवन के लिये महिलाओं को ही दोषी ठहराया जाता है।

मनुष्य समाज में रहकर ही अपने आपको सुरक्षित व आनंदित महसूस करता है। एकांत में मनुष्य व

अन्य प्राणियों में कोई अंतर नहीं है। इसलिये मनुष्य आजीवन ऐसे कार्य करता है, जिससे समाज में उसको उचित मान सम्मान मिल सके। समाज के सदस्यों द्वारा आदर–सम्मान नहीं मिलने पर दुःखी रहता है। यही कारण है कि मादक द्रव्य व्यसनी को सामाजिक तौर पर संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। मादक द्रव्य व्यसनी के साथ–साथ उसके परिवार और विशेष तौर पर पत्नी को शर्मिदंगी का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार मादक द्रव्य व्यसन के कारण महिलाओं को सामाजिक तौर पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । पति द्वारा मारपीट करने व गाली–गलौच करने पर या मादक द्रव्य के प्रभाव में आकर पुरुषों द्वारा छेड़छाड़ करने, दुष्कर्म की शिकार महिलाओं को सामाजिक तौर पर शोषण का सामना करना पड़ता है। 167 महिलाओं में से 85 महिलाओं (50.89 प्रतिशत) ने स्वीकार किया है कि उनके पति द्वारा मादक द्रव्य सेवन के कारण सामाजिक स्तर पर उनको वो दर्जा नहीं मिलता है जो अन्य महिलाओं को प्राप्त होता है।

मादक द्रव्य व्यसन के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। ये समस्याएँ सेवनकर्ता को प्रभावित करती हैं साथ ही उसके परिवार को भी इन समस्याओं से दो–चार होना पड़ता है। ऐसी दशा में परिवार के अन्य सदस्य तो व्यसनी का साथ छोड़ देते हैं, लेकिन पत्नी ऐसा नहीं कर पाती है। मादक द्रव्य व्यसन के कारण उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं में एक समस्या आर्थिक है यह समस्या मुख्य रूप से निम्न व मध्यम परिवार को अधिक झेलनी पड़ती है। मादक द्रव्य के कारण व्यक्ति धीरे पलायनवादी हो जाता है तथा अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा अपनी नशे संबंधी जरूरतों को पूरा करने में खर्च कर देता है। मादक द्रव्य की लत से गरीबी को बढ़ावा मिलता है व सामाजिक कल्याण में बाधा आती है।[6] ऐसी स्थिति में घर की महिला सदस्य आर्थिक तंगी का सामना करती है तथा रोटी, कपड़ा व मकान ऐसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रह पाती है। हद तो तब हो जाती है जब महिला की कमाई भी पति खर्च कर देता है। उसके आभूषण तक बेच देता है तथा पैसे नहीं देने पर हिंसा का सहारा लेने लगता है। यह महिला के आर्थिक शोषण की पराकाष्ठा है। 167 महिलाओं में से 89 अर्थात् 53.29 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया है कि उनके पति द्वारा मादक द्रव्य सेवन के कारण वे अपनी सामान्य आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाती है। 23 महिलाओं का मानना है कि उनको उदरपूर्ति के लिये दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। 11 महिलाओं ने माना कि उनके पति अपनी मादक द्रव्य की तलब शांत करने के लिये उनकी कमाई भी नशे में खर्च कर देते है। इस प्रकार से मादक द्रव्य व्यसन के कारण पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ आर्थिक परेशानियों का अधिक सामना करती है।

मादक द्रव्यों के कारण महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को निम्न आधारों पर सारणीबद्ध किया जा सकता हैः–

क.स.	विभिन्न प्रकार के प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या			
		संख्या के आधार पर		प्रतिशत के आधार पर	
		हां	नहीं	हां	नहीं
1.	व्यक्तिगत प्रभाव (शारीरिक व मानसिक)	97	70	58.08	41.92
2.	पारिवारिक प्रभाव	71	96	42.51	57.49
3.	सामाजिक प्रभाव	85	82	50.89	49.11
4.	आर्थिक प्रभाव	89	78	53.29	46.71

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि महिलाओं का शोषण इतिहास के प्रत्येक काल में होता रहा है। इतना अवश्य है कि शोषण के कारणों में परिवर्तन आ चुका है। पहले रूढ़िवादी होने के कारण शोषण होता था, तो अब आधुनिकता के नाम पर शोषण किया जाता है। वर्तमान समय में महिलाओं के शोषण के अनेक कारणों में से मादक द्रव्यों का उपयोग एक महत्त्वपुर्ण कारण है। मादक द्रव्य सेवन के कारण महिलाओं की लगभग आधी आबादी को शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। इससे मुक्ति के लिये अध्ययन में शामिल सभी महिलाओं का मानना है कि यथासंभव मादक द्रव्यों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। बिहार सरकार ने महिलाओं की मांग पर पुर्ण शराबबंदी व अन्य मादक द्रव्यों को प्रतिबंधित किया है, जिसके परिणामस्वरूप सभी प्रकार के अपराधों विशेषकर घरेलु हिंसा में कमी दर्ज की गई है।[7] नारी शोषण से मुक्ति के लिये मादक द्रव्यों पर प्रतिबंध एक कारगर माध्यम साबित हो सकता है। मादक द्रव्यों पर प्रतिबंध से महिलाओं पर होने वाले विभिन्न प्रकार के शोषण से पूर्ण मुक्ति ना सही लेकिन काफी हद तक सुधार किया जा सकता है। प्रतिबन्ध के अलावा नशे के प्रति जागरूकता, नशा मुक्ति शिविरों का आयोजन, महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना आदि सुझाव सामने आये। इस पर समाज की सभी संस्थाओं विशेष रूप से सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिये। इसके द्वारा हम आधी आबादी को सम्मानजनक समानतायुक्त व शोषणमुक्त सामाजिक परिवेश उपलब्ध करवा सकते है।

अंत टिप्पणी

1. *National crime records bureau, crime against womens report,2018 page no.83*
2. *मादक पदार्थो के सेवन की रोकथाम, राष्ट्रीय समाज रक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग, नई दिल्ली।*
3. *Ram Ahuja, Crime against women (1987). Rawat Publications,page no.238*
4. *Ram Ahuja, social problems, Rawat publications, page no. 244*
5. *महिला हिंसा के खिलाफ सामूहिक प्रयास, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय,भारत सरकार, पृष्ठ सं. 8*
6. *पत्र सूचना कार्यालय, सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। अंतर्राष्ट्रीय मादक पदार्थ निषेध दिवस 2018*
7. *www.india.com/hindi-news/bihar/after-liquor-ban-crime-graph-slumps-in-bihar-governor-satpal-malik/*